भारतीय चित्रकला

चित्रकला

- चित्रकला कला के सबसे उत्कृष्ट रूपों में से एक है जो रेखाओं और रंगों के माध्यम से मनुष्य के विचारों और भावनाओं को व्यक्त करती है।
- चट्टानों को गुफा निवासियों द्वारा उनकी कलात्मक संवेदनशीलता और रचनात्मक प्रेरणा को संतुष्ट करने के लिए चित्रित किया गया है।
- भारत में चित्रकला प्राचीन काल में प्रागैतिहासिक युग के बाद से शुरू हुई थी।
- चित्रकला के इतिहास की उत्पत्ति शिला चित्रकला से हुई और मिट्टी के बर्तन, कपड़ों, लघु चित्रों और अंततः आधुनिक चित्रों तक पहुंच गई।
- देश के विभिन्न भागों में चित्रकला की शैली में विविधता संस्कृति में विविधता को दर्शाती है क्योंकि संस्कृति और आजीविका चित्रकला के विषय थे और बाद में इन पर धर्म का प्रभुत्व स्थापित हो गया।
- भारत में चित्रकला के लिए प्रमुख प्रेरणा स्रोत तीन धर्मों - हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म और जैन धर्म का उदय था।
- मुख्य प्रभाव अत्यंत गहरा इतिहास, संस्कृति और विदेशियों का आगमन आदि था।
- भारत में चित्रकला आध्यात्मिक विषय-वस्तु, उच्च आदर्शों और लोगों की आम धारणा को दर्शाती हैं।

चित्रकला की जानकारी के महत्वपूर्ण स्रोत

- मुद्राराक्षस - विशाखदत्त द्वारा लिखित संस्कृत नाटक - चौथी शताब्दी के दौरान के कई प्रकार के चित्रों का उल्लेख करता है।
- ब्राह्मण साहित्य – पौराणिक कथाओं को दर्शाने के साथ चित्रकला शैली का उल्लेख करता है।
- बौद्ध साहित्य – विभिन्न प्रकृति और विषयों के साथ चित्रकला की विभिन्न शैलियों का उल्लेख करता है।
- विनयपिटाका - तीसरी - चौथी शताब्दी ईसा पूर्व - चित्रों वाले घर।

प्रागैतिहासिक चित्रकला

- प्रागैतिहासिक चित्रकला आमतौर पर गुफाओं की चट्टानों में बनाई गई हैं।
- प्रमुख विषयों में हाथी, गेंडे, मवेशी, सांप, हिरण, आदि जैसे जानवर और पौधों जैसे अन्य प्राकृतिक तत्व हैं।
- प्रागैतिहासिक चित्रकला को तीन चरणों में वर्गीकृत किया जाता है - पुरापाषाण, मध्यपाषाण और ताम्रपाषाण।

- विशेषताएं
- रंगद्रव्य के लिए प्रयुक्त पदार्थ जैसे: गैरिक या गेरू। उन्होंने विभिन्न रंगों के पदार्थों का उपयोग किया।
- प्रमुख विषय: समूह शिकार, चरागाह, घुड़सवारी दृश्य, आदि।
- चित्रकला के रंग और आकार पीढ़ी दर पीढ़ी विकसित होते गए हैं।
- उदाहरण: भीमीबेटका गुफाएं, मध्यप्रदेश; जोगीमारा गुफाएं, छत्तीसगढ़; नरसिंहगढ़, मध्य प्रदेश।

भित्तिचित्र

- भारत में भित्तिचित्र दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से मध्यकालीन युग तक अस्तित्व में रही।
- इन्हें **दीवार चित्रकला** भी कहा जाता है क्योंकि इन्हें ठोस संरचनाओं वाली दीवारों पर बनाया गया है।
- भित्तिचित्र के प्रमुख स्थान प्राकृतिक गुफाएं और चट्टानों के कटे हुए कक्ष हैं।
- प्रमुख विषय: हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म और जैन धर्म
- उदाहरण: अजंता गुफाएं, एलोरा गुफाएं, बाघ गुफा चित्र, रावण छाया शिला चित्र, आदि।

भित्तिचित्र के स्थान	क्षेत्र	विशेषता
अजंता	महाराष्ट्र	· चौथी से आठवीं शताब्दी ईस्वी तक विभिन्न शासकों की निगरानी में; · केवल बौद्ध धर्म; · चित्रकला का माध्यम: खनिज एवं वनस्पति रंग; · टेम्परा शैली (वर्णक का उपयोग) · फ्रेस्को पेंटिंग भी
एलोरा गुफाएं	महाराष्ट्र	· सातवीं शताब्दी ईस्वी से · सभी तीन धर्मों से संबंधित चित्रकला · बाद में गुजराती शैली में चित्रकारी
बाघ गुफा	मध्य प्रदेश	· दृढ़ प्रतिदर्श और मजबूत रूपरेखा · अधिक लौकिक और मानवीय

byjusexamprep.com

		· प्रकृति में मुख्यत: धर्मनिरपेक्ष
रावण छाया	ओडिशा	· सातवीं शताब्दी ईस्वी · फ्रेस्को पेंटिंग
सित्तनवासल गुफा चित्रकला	तमिलनाडु	· नौवीं और दसवीं शताब्दी के आस-पास · न केवल दीवारों पर बल्कि खंभों और छतों पर भी · ज्यादातर चित्रकारी जैन मंदिरों में
लेपाक्षी	कर्नाटक	· ज्यादातर मंदिर की दीवारों पर · विजयनगर के काल में · धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष विषय

लघु चित्रकला

- लघु चित्रकला को छोटी और सविस्तार चित्रकारी के साथ चित्रित किया जाता है
- मानव के चित्र ज्यादातर पार्श्व रूपों, उभरी आंखों, पतली कमर, नुकीली नाक, आदि में देखे जाते हैं।
- अलग-अलग पात्रों के लिए विभिन्न रंगों और विविध आधार का उपयोग किया जाता था।
- प्राय: कागज, कपड़े, ताड़ के पत्तों, आदि पर बनाई जाती थी।
- ज्यादातर 11वीं शताब्दी ईस्वी के बाद विकसित और ज्यादातर पूर्वी एवं पश्चिमी क्षेत्रों पर केंद्रित थी।
- मुस्लिमों के आने से लघु चित्रकला की विशेषताओं को काफी परिवर्तन आया। प्रमुख परिवर्तन सांसारिक रंगत, प्राथमिक रंगों की अनुपस्थिति, तटस्थ रूप-रंग इत्यादि थे।
- लघु चित्रकला की विशेषताएं देश के विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न थीं।

क्षेत्र/अवधि	स्कूल	अवधि	विशेषता	उदाहरण
पूर्वी भारत	पाला	11-12वीं ईस्वी	· घुमावदार रेखा और दबे हुए रंग · एकल चित्र और शायद ही कभी समूह चित्र मिले हों।	अष्टसहसरिका प्रज्ञपरमित (ज्ञान की पूर्णता) की पांडुलिपि

			· बौद्ध धर्म से काफी प्रभावित है	
पश्चिम भारत	वेस्टर्न इंडिया स्कूल	12-16वीं ईस्वी	· आंखों, स्तनों, कूल्हों जैसे मानव अंगों को बढ़ाया। · उभरी आंखों के साथ चित्रों का चौरस होना · मुख्य रूप से जैन धर्म से प्रभावित है	अहमदाबाद में देवसानो पाडो भंडार में कल्पसूत्र की पांडुलिपियां
दिल्ली सल्तनत काल	-	13-16वीं ईस्वी	· स्वदेशी और फारसी तत्वों का संश्लेषण · सचित्र पांडुलिपियां · पारंपरिक तत्व	नासीर शाह के शासन काल के दौरान निमतनामा
मुगल	-	16-19वीं ईस्वी	· दो फारसी विशेषज्ञ - मीर सैय्यद अली और अब्दुल समद खान (हुमायूं के शासनकाल) · फारसी चित्रकारी के स्वदेशी और सैफवादी स्कूल का संश्लेषण · अच्छी और रुचिकर चित्रकारी के साथ यथार्थवाद · उच्च सौंदर्यपरक योग्यता · प्रकृति में कुलीन और धर्मनिरपेक्ष · जहांगीर के शासनकाल में अपने चरम पर पहुंच गया · औरंगजेब शासनकाल के दौरान महत्ता समाप्त	तूतीनामा; हमाज़नामा; साड़ी के गुलिस्तान

byjusexamprep.com

दक्कन	अहमदाबाद	16वीं ईस्वी	· समृद्ध और चमकीले रंग · फारसी प्रभाव	अहमदनगर के बुरहान निजाम शाह द्वितीय का छायाचित्र
	बीजापुर	16वीं ईस्वी	· समृद्धशाली रंग · पेड़ और जानवरों का होना · सुनहरे रंग का उपयोग (फारसी प्रभाव)	नजुम-अल-उलम (विज्ञान के सितारे)
	गोलकुंडा	16वीं ईस्वी	· फारसी प्रभाव · समृद्ध और चमकदार रंग	मैना चिड़िया के साथ एक महिला, डबलिन
	हैदराबाद	18वीं ईस्वी	· विशिष्ट संस्कृति का वर्णन। परिधान, आभूषण, वनस्पति, जीव, परिदृश्य और रंग	नौकरानी के साथ एक महिला, विलावल रागिनी
	तंजोर	18-19वीं ईस्वी	· सुस्पष्ट चित्रकारी, छायांकन तकनीकें · शुद्ध और चमकदार रंगों का उपयोग	लकड़ी की चित्रकला में राम का राज्याभिषेक
राजस्थानी स्कूल (17-19वीं ईस्वी) (पश्चिम भारत)	मालवा	17वीं ईस्वी	· परस्पर तुलनात्मक रंगों का उपयोग · चित्रों का परिमार्जन	रागमाला 1680 ईस्वी
	मेवाड़	17वीं ईस्वी	· गहरे रंग · रंग चमकदार और परस्पर तुलनात्मक · पीले रंग की पृष्ठभूमि में चित्र के ऊपर शीर्ष पर काले रंग से चित्रकला का नाम लिखा होना	अरण्य कांड, सरस्वती भंडार
			· लाल रंग चमकदार किनारा	भैरवी रागिनी चित्रकला,

byjusexamprep.com

	बूंदी	17वीं ईस्वी	· अतिव्यापी और अर्ध-प्राकृतिक पेड़। · सुनहरे रंग में सूर्योदय	इलाहाबाद संग्रहालय
	कोटा	18-19वीं ईस्वी	· अधिकांश जगह पर पहाड़ी वृक्षों का होना · बाघ और भालू के शिकार के विषय बहुत लोकप्रिय हैं	रंगीन वसंत
	अम्बर-जयपुर	18वीं ईस्वी	· जयपुर के शासकों के चित्रों की अधिकता	जयपुर चित्रकारी
	मारवाड़	17वीं ईस्वी	· रूढ़िवादी और ओजपूर्ण लोक शैली में निष्पादन · मुगल शैली से पूर्णत: अप्रभावित	रागमाला (कुमार संग्राम सिंह का संग्रह)
	बीकानेर	17वीं ईस्वी	· मुगल का अत्यधिक प्रभाव · धर्म और न्यायालय के दृश्यों का विषय	राधा और कृष्ण चित्रकला
	किशनगढ़	18वीं ईस्वी	· उत्कृष्ट चित्रकला · मानव चित्रों का अच्छा प्रतिरूपण · अधिक विस्तार के लिए प्रकृति का उपयोग	·बनी ठनी (भारत की मोनालिसा) निहाल चन्द द्वारा बनाई गयी राधा और कृष्ण, किशनगढ़
पहाड़ी स्कूल (हिमालयी राज्य)	बसहोली	17वीं ईस्वी	· ओजपूर्ण और मोटी रेखाएं · गहरे चमकदार रंग	रथ पर सवार एक देवी
	गूलेर	18वीं ईस्वी	· मृदु और शीतल रंग · मुगलों की प्राकृतिक शैली से प्रेरित	गूलर के राजा बिशन सिंह का छाया चित्र

byjusexamprep.com

	कांगड़ा	18वीं ईस्वी	· ये कांगड़ा के राजा संसार चंद के चित्रों की शैली के समान हैं। · इन चित्रों की रूप-रेखा में महिलाओं के चेहरे में नाक लगभग माथे के साथ सीध में है, आंखें बड़ी और संकीर्ण हैं और ठोड़ी नोकदार है	-
	कुल्लू-मंडी	18वीं ईस्वी	· उत्साहपूर्ण चित्रकारी · काले और फीके रंगों का उपयोग · पृथक लोक शैली	महिला और सारस
ओडिशा		18-19वीं ईस्वी	· रूपरेखा चित्रकारी ताड़ के पत्ते पर एक लेखनी द्वारा प्रस्तुत की गई · चित्रकला पर चारकोल या स्याही पोछी गई	गीता गोविंद, ताड़ के पत्ते पर चित्रकारी

लोक चित्रकला

- लोक चित्रकला प्राचीन काल से मौजूद है और देश के विभिन्न क्षेत्रों की शैलियों और पैटर्न में विशाल विविधता है।
- अधिकांश लोक चित्रकलाएं सजीव हैं और विषय धर्म से प्राकृतिक वस्तुओं और दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों में भिन्न होता है।
- लोक चित्रकला में आमतौर पर विभिन्न प्राकृतिक वस्तुओं की पृष्ठभूमि के साथ जीवंत और प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया जाता है।

लोक चित्रकला	क्षेत्र	विशेषता
मधुबनी	बिहार (तराई)	· विरोधाभास पैटर्न के साथ चमकदार रंग · पारंपरिक रूप से महिलाओं द्वारा की जाती है

byjusexamprep.com

		· जनजातीय रूपांकन और चमकदार सांसारिक रंगों का उपयोग
वारली	महाराष्ट्र	· दैनिक और सामाजिक जीवन की स्पष्ट अभिव्यक्ति · आमतौर पर गांव के घरों की दीवारों पर
पट्टचित्र	ओडिशा	· कैनवास पर चित्रकारी · समृद्ध रंगीन रूपांकन और डिजाइनों द्वारा व्यक्त · ज्यादातर पौराणिक चित्रण
कालमेजुथु	केरल	· केरल के मंदिरों और अलौकिक उपवन में प्रचलित कर्मकांडी कला · देवी काली और भगवान अयप्पा जैसे देवताओं के चित्र का भूमि पर चित्रण।
कालीघाट	पूर्वी भारत (कलकत्ता)	· कारखाने के कागज पर पानी के रंग का उपयोग · सामान्य विषय धर्म, सामाजिक भावनाएं, आदि।
कलमकारी	आंध्र प्रदेश	· कलम के रूप में नोकदार बांस और सूती कपड़े का आधार · रंगों के रूप में वनस्पतिक रंग
मंजूषा	बिहार	· सर्प चित्रकला के रूप में भी जानी जाती है (सांप रूपांकन का उपयोग) · जूट और कागज पर निष्पादित चित्रकारी
थांका	सिक्किम	· आधार के रूप में सूती कैनवास · बौद्ध धर्म का प्रभाव · विभिन्न दृश्यों के लिए विभिन्न रंगों का उपयोग

byjusexamprep.com